मल्टीमीडिया में बढ़ती जॉब की उम्मीदें

आधुनिक युग में कंप्यूटर से जुड़े न जाने कितने ही क्षेत्र हैं जो जॉब की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण हैं। मल्टीमीडिया भी उन्हीं में से एक है। इन दिनों युवाओं की पहली पसंद बनी हुई है। अगर आप भी अपनी कल्पना को मूर्तरूप देने में सक्षम हैं तो बेशक इस क्षेत्र को अपने भविष्य के तौर पर अपनायें। फिल्मों में अक्सर ऐसा देखने को मिलता है, जो वास्तव में शायद मुश्किल हो। लेकिन यह मल्टीमीडिया में वेबसाइट डिजाइनिंग एनिमेशन स्पेशल इफेक्ट, और डिजिटल वीडियो तैयार करना शामिल है। आज देश में यूटीवी यशराज फिल्म्स, रिलायंस बिग एंटरटेनमेंट जैसे बड़े-बड़े प्रोडक्शन घरानों ने ड्रीम वर्क्स वाल्ट डिज्नी और पिक्चर एनिमेशन जैसे प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ मिलकर पहले ही इस सेक्टर को विस्तार देने की अपनी योजनाओं की घोषणा कर दी है। इन सब के चलते यह एक संभावनाशील सेक्टर है, जिसमें युवाओं के लिए रोजगार के भरपूर अवसर हैं।

आखिर मल्टीमीडिया है क्या?

मल्टीमीडिया वास्तव में तकनीकी और कला का मिलाजुला रूप है। कंप्यूटर तकनीकी के विकास के साथ मल्टीमीडिया ने अब एक पेशे के रूप ले लिया है। मल्टीमीडिया के तहत कंप्यूटर तकनीकी के विकास के साथ मल्टीमीडिया ने अब एक पेशे का रूप ले लिया है। मल्टीमीडिया के तहत कम्प्यूटर तकनीकी के जरिए टेक्स्ट ग्राफिक्स एनिमेशन आडियो और वीडियो जैसी एलीमेन्ट के उचित संयोजक से एंटरटेनमेन्ट मूवीज से लेकर एजुकेशन प्रोग्राम समेत और कई तरह की पावरफुल एप्लिकेशंस को बनाया जाता है। वीडियो और साउंड एडिटिंग से लेकर स्पेशल इफेक्ट्स एनिमेशन गेम्स इंटरएक्टिव मल्टीमीडिया प्रोग्रामिंग और वेब कंटेंट डेवलपमेंट तक इसके इस्तेमाल का व्यापक दायरा है।

असीमित रोजगार- हमारे देश की एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री सालाना 20 फीसदी दर से बढ़ रही है। जिसको देखते हुए आईटी सेवाओं से जुड़ी इंटरएक्टिव डिजिटल मल्टीमीडिया एनिमेशन और गेमिंग इत्यादि के लिए निकट भविष्य में तकरीबन 11 लाख दक्ष पेशेवरों की जरूरत पड़ेगी। इसके अलावा कंप्यूटर वीडियो और वायरलेस गेम डेवलपमेंट सेक्टर में भी पिछले कुछ वर्षों के दौरान उल्लेखनीय विकास दर्ज किया गया है। नैस्काम के मुताबिक एनिमेशन सेक्टर में रोजगार वर्ष 2012 तक 14700 से दोगुना होकर 29500 हो जाने की उम्मीद है। इसी तरह गेमिंग उद्योग भी अगले तीन साल में काफी नौकरियां पैदा करेगा। अनुमान है कि फिलहाल जहां 2300 लोग इस क्षेत्र में काम कर रहे हैं, वहीं 2012 में गेमिंग उद्योग में 10700 लोग होंगे। भारत में

एनिमेशन और गेमिंग उद्योग के आगे बढ़ने के लिए काफी संभावनाएं हैं।

है ढेरों विकल्प आपके लिए- एक बार कोर्स कंप्लीट कर लेने के बाद आप इस क्षेत्र में काफी तरक्की कर सकते हैं। इस क्षेत्र में आप एडिटर कंटेंट प्रोवाइडर एनिमेटर, डिजाइनर, डेवलपर, मल्टीमीडिया प्रोजेक्टर मैनेजर, साउंड टेक्निशियन, वीडियो टेक्निशियन समेत और भी कई तरह के काम कर सकते हैं। मल्टीमीडिया प्रोफेशनल्स यदि चाहे तो प्रिंटमीडिया वेब पब्लिकेशन्स और ब्राडकास्ट मीडिया एंड वेब डिजाइन एनिमेशन इलेक्ट्रानिक व न्यूज मीडिया तथा फिल्मों में भी इस क्षेत्र से जुड़े प्रोफेशनल्स के लिए रोजगार के विकल्प उपलब्ध हैं।

आवश्यक कोर्स-इन दिनों मल्टीमीडिया से संबंधित कोर्स हैं, जिसमें सर्टिफिकेट कोर्स से लेकर तीन से चार साल के बैचलर डिग्री कोर्स भी उपलब्ध है। इंडस्ट्रियल डिजाइनिंग सेंटर नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन और सीडेक से जुड़े एनएमआरसी डेवलपमेंट के बारे में अकादमिक थिंकिंग को प्रोत्साहित कर रहे हैं। इसके अलावा एनआईडी में फिलहाल एनिमेशन फिल्म डिजाइन एंड वीडियो कम्युनिकेशन ग्राफिक डिजाइन और न्यू मीडिया डिजाइन में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा कोर्स उपलब्ध है। कुछ ऐसे कोर्स भी हैं जो इस क्षेत्र के लिए काफी महत्वपूर्ण है।

- बैचलर इन मल्टीमीडिया
- बैचलर इन एनिमेशन
- बैचलर इन गेम्स एंड इंट्रेक्टिव मीडिया डिजाइनर
- बैचलर इन विजुअल कम्युनिकेशन
- डिप्लोमा इन मल्टीमीडिया एंड एनिमेशन।

बेहतर सैलरी- मल्टीमीडिया के क्षेत्र में आपको शुरूआती सैलरी के तौर पर 10-12 हजार रुपये प्रतिमाह से लेकर 25 हजार रुपये प्रतिमाह तक मिल सकते हैं। वहीं संबंधित क्षेत्र में अनुभव के बाद आप 40 हजार रुपये प्रतिमाह से अधिक की कमाई कर सकते हैं। अमेरिका, जापान, दक्षिण कोरिया, फिलीपिंस, में एनिमेशन प्रोजेक्ट का काम काफी महंगा होने के कारण वहां की कंपनियां ऐसे काम बड़ी संख्या में भारत से आउटसोर्सिंग कर रही हैं। इन सबके अलावा कार्टून फिल्मों, विज्ञापन आदि के लिए भी काम करके हर माह लाखों रुपए कमा सकते हैं।

संबंधित संस्थान

आईआईटी गुवाहाटी मुंबई
एरिना एनिमेशन एकेडमी
इंटिग्रेटेड मैनेजमेंट कॉलेज नयी दिल्ली
माया एकेडमी ऑफ एडवांस सिनेमेटिक्स हैदराबाद, मुंबई, नई दिल्ली
गैको एनिमेशन स्टूडियो नयी दिल्ली
एएकए एनिमेशन एंड फाइन आर्ट्स एकेडमी, कोयम्बटूर, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन अहमदाबाद।

फिल्मों में अक्सर ऐसा देखने को मिलता है, जो वास्तव में शायद मुश्किल हो। लेकिन यह मल्टी मीडिया में वेबसाइट डिजाइनिंग एनिमेशन स्पेशल इफेक्ट्स और डिजिटल वीडियो तैयार करना शामिल है। आज देश में यूटीवी यशराज फिल्म्स रिलायंस बिग एंटरटेनमेन्ट जैसे बड़े-बड़े प्रोडक्शन घरानों ने ड्रीम वर्क्स वाल्ट डिज्नी और पिक्चर एनिमेशन जैसे प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ मिलकर पहले ही इस सेक्टर को विस्तार देने की अपनी योजनाओं की घोषणा कर दी है।

आखिर क्या और कैसे पढ़ते हैं टॉपर्स

मनोविज्ञान

मनोविज्ञान को एक वैकल्पिक विषय के रूप में चुनें तो कुछ बातें ध्यान में रखें। सबसे पहले खुद से सवाल करें कि मनोविज्ञान को वैकल्पिक विषय के तौर पर क्यों चुना जाए। मनोविज्ञान मानव व्यवहार के अध्ययन का विषय है जिसका अनुप्रयोग मानव जाति के कल्याण में निहित है। इस विषय को हिंदी व अंग्रेजी दोनों माध्यम के विद्यार्थियों द्वारा बराबरी से चुना जाता है। मनोविज्ञान को चुनने के पीछे इसके दिलचस्प विषय होने के साथ-साथ कई अन्य कारण भी छिपे हुए हैं। यह एक ऐसा विषय है जिसका सिलेबस एकदम स्पष्ट है। इस विषय के संदर्भ में सटीक अध्ययन सामग्री उपलब्ध है। विषयगत अवधारणाओं को समझने के लिए बड़ा क्षेत्र है और इनको प्रायोगिक तौर पर भी समझा जा सकता है। सिविल सेवा परीक्षा में इसको चुनने के पीछे मेरा उद्देश्य यही था कि यह एक रुचिकर विषय है जिसकी तैयारी के लिए भी काफी समय मिलता है क्योंकि इसका पेपर सामान्य अध्ययन के पेपरों के पर्याप्त समय बाद होता है जिससे रिवीजन करने और बेहतर तैयारी का अच्छा खासा समय मिल जाता है।

अध्ययन सामग्री – किसी भी परीक्षा की तैयारी में अध्ययन सामग्री का चयन बेहद खास होता है। सही और सटीक अध्ययन सामग्री के चयन पर जोर दें, चुनिंदा किताबें खरीदें और कोशिश यह हो कि कम से कम समय में पूरे सिलेबस से संबंधित अध्ययन सामग्री जुटा लें। मेरा मानना यही है कि कई किताबों को एक बार पढ़ने से अच्छा है एक किताब को कई बार पढ़ लिया जाए। मनोविज्ञान हो या? अन्य विषय सबसे बेहतर तरीका यही है कि प्राथमिक रूप से जो उपलब्ध है उसे पढ़ें, उसके बाद जो छूटे या जो कमी रहे उसके लिए अध्ययन सामग्री जुटाएं।

अध्ययन सामग्री के चयन में यह बात विशेष रूप से ध्यान में रखें कि आपको पीएचडी के लिए नहीं सिविल सेवा परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए पठनीय सामग्री की जरूरत है। इसलिए सबसे पहले पिछले वर्षों के पेपर देखें और सिलेबस को कंठस्थ कर लें। अब सिलेबस और पेपरों में किए जाने वाले सवालों के औसत से बेहतर जवाब दे सकें, उसके लिए सामग्री जुटाएं। मैं इस बारे में यही राय दूंगी कि यदि खुद यह कर पाने में मुश्किल लगता है तो कोचिंग ज्वाइन करें या कोचिंग से अध्ययन सामग्री लें क्योंकि इससे आपका आधा बोझ कम हो जाएगा और वहां से सटीक बिंदुवार अध्ययन सामग्री भी मिल जाएगी।

कहां से क्या पढ़ें

मुकुल पाठक के नोट्स – दोनों पेपरों के सिलेबस के एक-एक बिंदु को समझने के लिए एनसीईआरटी की किताबों के बाद यही सबसे मुफीद अध्ययन सामग्री है। बिना किसी पूर्वाग्रह के कोचिंग ज्वॉइन कर सकें तो कोचिंग ज्वॉइन करें अन्यथा इन नोट्स को पढ़ें। अपनी परिस्थिति के मुताबिक निर्णय लें।

मॉर्गन किंग/ बैरोन या सिसरेली – इन तीनों में से कोई भी एक किताब मनोविज्ञान के सामान्य सिद्धांतों व अवधारणाओं को समझने में मददगार साबित होगी। लेकिन इससे पहले एनसीईआरटी की किताबें तो पढ़ना अनिवार्य ही होगा। अन्यथा इन किताबों की कई अवधारणाओं को समझने में दिक्कत आएगी। इन किताबों को केवल पढ़ें नहीं, इनसे नोट्स भी तैयार करें जो परीक्षा से ठीक पहले रिवीजन में भी मदद करेंगे।

क्रेविक एंड वैक्लिन – मनोविज्ञान के विधि सिद्धांतों और तंत्रों के उच्चस्तरीय अध्ययन के लिए यह सबसे सटीक किताब है। प्रत्यक्षण, व्यक्तित्व, विचार और भाषा, मात्रात्मक मनोविज्ञान जैसे टॉपिक इसमें से ही पढ़ें और यदि पर्याप्त समय है तो पूरी किताब पढ़ें। संभव हो तो कम से कम दो बार रिवीजन भी करें। जो उम्मीदवार 350 से अधिक अंक पाना चाहते हैं उनके लिए इसे पढ़ना बेहद जरूरी है।

कांच के टुकड़ों से चमक जाएगा कैरियर

हमारे दैनिक जीवन में कांच का इस्तेमाल कई रूपों में होता है। चाहे बर्तनों की बात हो या भवन निर्माण की, चिकित्सा की बात हो या विज्ञान संबंधी उपकरणों का जिक्र हो, फर्नीचर निर्माण हो या किसी शोपीस और शैंडेलियर की रचना, खिलौनों की चर्चा हो या वाहन की, शीशे के बगैर बात बन ही नहीं सकती। हालांकि अब कांच की जगह कई रूपों में प्लास्टिक का भी इस्तेमाल किया जाने लगा है, इसके बावजूद कई ऐसे क्षेत्र हैं, जहां कांच की जगह कोई अन्य पदार्थ ले ही नहीं सकता। कांच के इस व्यापक इस्तेमाल के कारण यह रोजगार उत्पन्न करने के मामले में भी काफी महत्वपूर्ण है।

काम की रूपरेखा

इस सेक्टर में आप या तो ग्लास प्रोडक्शन से संबंधित कार्यों से जुड़ सकते हैं या इससे संबंधित क्राफ्ट वर्क्स से। ग्लास प्रोडक्शन में जहां बड़े पैमाने पर शीशे के उत्पादन से संबंधित कार्य किए जाते हैं, वहीं क्राफ्ट वर्क्स के तहत किसी वर्कशॉप या स्टूडियो में शीशे के विभिन्न उत्पाद बनाए जाते हैं, जैसे ग्लास वेयर, स्टेंड ग्लास आदि। शीशे से संबंधित डिजाइनिंग का काम भी इसके तहत आता है।
?

कोर्स कैसे-कैसे

कांच की जरूरत और उपयोगिता के मद्देनजर ही इससे संबंधित पाठ्यक्रम विभिन्न संस्थानों में उपलब्ध है, जिनके माध्यम से कॅरियर की दिशा निर्धारित की जा सकती है। इस क्षेत्र में डिप्लोमा, सर्टिफिकेट, स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर के कोर्स हैं, जिनमें दाखिला लिया जा सकता है। ग्लास प्रौद्योगिकी और उत्पाद डिजाइन जैसे क्षेत्रों में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम भी शामिल हैं। कांच से जुड़े पाठ्यक्रमों में आप कांच के गुणों को समझते हुए उसका विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हैं। इसके तहत ग्लास की ढलाई और उत्पादन से संबंधित समस्त बारीकियों से आप अवगत होते हैं। इसके अलावा ग्लास पर नक्काशी और विभिन्न उत्पादों के लिए इसके इस्तेमाल से संबंधित जानकारी भी आपको मिलती है।

योग्यता क्या हो

ग्लास से संबंधित विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए शैक्षणिक योग्यता इस बात पर निर्भर करती है कि आप ग्लास इंडस्ट्री में किस रूप में जुड़ना चाहते हैं। ग्लास इंजीनियरिंग के लिए जहां विज्ञान (पीसीएम) विषय से 12वीं पास होना चाहिए, वहीं ग्लास पेंटिंग या डेकोरेशन से संबंधित कोर्स में सभी आवेदन कर सकते हैं। आईआईटी जैसे संस्थानों में पढ़ाई करनी हो तो जेईई (मेंस व एडवांस्ड) क्लियर करना होगा। अन्य संस्थानों के भी अपनी-अपनी प्रवेश प्रक्रियाएं होती हैं। ?

व्यक्तिगत गुण

सेरामिक और ग्लास से संबंधित उत्पादों पर नजर डालें तो उनमें क्रिएटिविटी और डिजाइनिंग का खास महत्व होता है। ऐसे में इस क्षेत्र में कॅरियर बनाने के लिए क्रिएटिव माइंड का होना भी जरूरी है। इस क्षेत्र में टीम के साथ मिलकर काम करना आवश्यक है। प्रोडक्शन के कार्य से जुड़ने के लिए गर्म माहौल में भी धैर्यपूर्वक काम करने की क्षमता होनी चाहिए।

मौके अनेक

छोटे स्तर से लेकर बड़े स्तर तक, इस क्षेत्र में जॉब कई रूपों में उपलब्ध है। जॉब भी है और स्वरोजगार के तमाम अवसर भी उपलब्ध हैं। कोर्स करने के बाद आप अपनी शुरुआत एक प्रशिक्षु (ट्रेनी) के तौर पर कर सकते हैं। इसके तहत आप शीशे की फैक्टरी या कार्यशाला में काम कर सकते हैं। शीशा का कारोबार व्यापक है। इसलिए ग्लास सेक्टर में तकनीक से लेकर प्रबंधन तक कॅरियर की तमाम संभावनाएं उपलब्ध हैं। टेंटेड ग्लास, आर्टिफिशियल ज्वेलरी आदि बनाने वाली कंपनियों में भी आप अवसर पाते हैं।

मुख्य संस्थान

ग्लास एकेडमी, कांचीपुरम, तमिलनाडु
www.glass-academy.com
गौरांग इंस्टीट्यूट ऑफ ग्लास डिजाइन टेक्नोलॉजी एंड इन्फॉर्मेशन, अहमदाबाद
www.glassdesigninstitute.com
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास, चेन्नई
www.iitm.ac.in/glassblowingsection
केंद्रीय कांच एवं सेरामिक अनुसंधान संस्थान, कोलकाता
www.cgcri.res.in
नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन, अहमदाबाद
www.nid.edu?